17

भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान में राजभाषा के बढ़ते चरण

भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान में वर्ष-दर-वर्ष हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में अभिवृद्धि हो रही है । भारत सरकार की राजभाषा नीति को संस्थान में सुचारु रूप से कार्यान्वित किया जा रहा है । राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निहित लक्ष्यों को इस संस्थान में लगभग पूरा कर लिया गया है । संस्थान द्वारा समस्त प्रशासनिक कार्य शत-प्रतिशत हिन्दी में और यथाआवश्यक द्विभाषी हो रहा है । वैज्ञानिक कार्यों में भी हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाता है । न केवल मात्रात्मक रूप में बल्कि हिन्दी के प्रयोग में गुणवत्ता की ओर भी ध्यान दिया जा रहा है ।

संस्थान के पूर्वानुमान तकनीक प्रभाग की अध्यक्षा, डॉ. रंजना अग्रवाल को केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् द्वारा आयोजित अखिल भारतीय वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों पर हिन्दी लेख प्रतियोगिता के अन्तर्गत उनके लेख "मौसम चरों पर आधारित फ़सलों का पूर्वानुमान" के लिए अखिल भारतीय महिला (विशेष) पुरस्कार (2008-09) प्रदान किया गया तथा भारत सरकार, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग द्वारा आयोजित "भारतेन्दु हरिशचन्द्र पुरस्कार योजना" के अन्तर्गत प्रथम पुरस्कार प्राप्त उनकी पाण्डुलिपि "विज्ञान में ताक-झाँक" को भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशन की स्वीकृति प्रदान कर दी गयी है ।

प्रतिवेदनाधीन अवधि में संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गयीं । इन बैठकों में राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अनुपालन को सुनिश्चित करने, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम की विभिन्न मदों, हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन, कार्यशालाओं के नियमित आयोजन, हिन्दी सप्ताह के आयोजन इत्यादि पर विस्तार से चर्चा हुई । राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन 24 अप्रैल 2010, 24 जुलाई 2010, 27 अक्टूबर 2010 तथा 26 फरवरी 2011 को हुआ ।

इस वर्ष में संस्थान के कर्मियों के लिए चार कार्यशालाएँ आयोजित की गयीं । पहली कार्यशाला 28 जून 2010 को "एम.एस. एक्सिल का प्रयोग" विषय पर आयोजित की गयी । इस कार्यशाला में संस्थान के संगणक अनुप्रयोग प्रभाग के तकनीकी अधिकारी, श्री पन्ना लाल गुप्ता द्वारा प्रतिभागियों को व्याख्यान दिया गया । द्वितीय कार्यशाला 29 सितम्बर 2010 को "इण्टरनेट व ई-मेल का कार्यालय में उपयोग" विषय पर आयोजित की गयी । इस कार्यशाला में संस्थान के संगणक अनुप्रयोग प्रभाग के तकनीकी अधिकारी, श्री सुभाष चन्द्र ने प्रतिभागियों को इण्टरनेट व ई-मेल के सम्बन्ध में जानकारी दी । इस वर्ष की तृतीय कार्यशाला का आयोजन "इण्टरनेट व ई-मेल (पार्ट-II)" विषय पर हुआ । इस कार्यशाला में संस्थान के संगणक अनुप्रयोग प्रभाग के ही तकनीकी अधिकारी, श्री एस. के. सबलानिया एवं श्री सुभाष चन्द्र ने प्रतिभागियों को इण्टरनेट व ई-मेल के सम्बन्ध में अतिरिक्त जानकारी उपलब्ध करायी जिसका प्रतिभागियों द्वारा अपने दैनिक कार्य में उचित ढंग से उपयोग किया जा सके। चतुर्थ कार्यशाला 24 मार्च 2011 को "हिन्दी में ई-मेल का प्रेषण" विषय पर आयोजित की गयी। इस कार्यशाला में संस्थान के सहायक अभियन्ता,

श्री संतोष कुमार सिंह द्वारा प्रतिभागियों को हिन्दी में ई-मेल करने के सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध करायी गयी।

संस्थान में कार्यरत सभी हिन्दीतर भाषी अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिन्दी ज्ञान सम्बन्धी प्रशिक्षण पूरा किया जा चुका है । आज तक की स्थिति के अनुसार, संस्थान में अब कोई ऐसा हिन्दीतर भाषी अधिकारी/कर्मचारी शेष नहीं रह गया है जिसे हिन्दी ज्ञान सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जाना शेष हो । इसके अतिरिक्त, "हिन्दी शिक्षण योजना" के अन्तर्गत संस्थान में हिन्दी आशुलिपि के प्रशिक्षण का लक्ष्य भी संस्थान द्वारा पूरा कर लिया गया है तथा केवल दो टंककों का हिन्दी टंकण परीक्षा का पूरक परिणाम होने के कारण उनके द्वारा हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत शीघ्र होने वाली हिन्दी टंकण परीक्षा दी जानी है ।

संस्थान में वार्षिक कार्यक्रम में निहित लक्ष्यों को पूरा करते हुए संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपनी ओर से लिखे जाने वाले सभी पत्र तो हिन्दी अथवा द्विभाषी रूप में लिखे ही गये साथ ही, 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्रों से अंग्रेज़ी में प्राप्त पत्रों के उत्तर भी शत-प्रतिशत हिन्दी में अथवा द्विभाषी रूप में दिये गये । 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों की राज्य सरकारों एवं उनके कार्यालयों और ग़ैर-सरकारी व्यक्तियों के साथ पत्राचार शत-प्रतिशत हिन्दी में अथवा अपेक्षानुसार द्विभाषी रूप में ही किया गया । संस्थान के विभिन्न वैज्ञानिक प्रभागों तथा प्रशासनिक अनुभागों द्वारा आयोजित की जाने वाली बैठकों की कार्यसूची तथा कार्यवृत्त शत-प्रतिशत हिन्दी में अथवा द्विभाषी रूप में जारी किये गये ।

अपना प्रशासनिक कार्य शत-प्रतिशत हिन्दी में करने के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निहित लक्ष्य को संस्थान द्वारा पहले ही प्राप्त कर लिया गया है। अपना कार्य शत-प्रतिशत हिन्दी में करने के लिए इस समय संस्थान में दस अनुभाग विनिर्दिष्ट हैं ।

प्रशासनिक कार्य के अतिरिक्त संस्थान में वैज्ञानिक प्रकृति के कार्यों में भी हिन्दी के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाता है । वैज्ञानिकों ने अपनी परियोजना रिपोर्टों के सारांश द्विभाषी रूप में दिये, विद्यार्थियों द्वारा अपने शोध-प्रबन्धों में द्विभाषी रूप में सार प्रस्तुत किये गये। वैज्ञानिकों एवं तकनीकी कर्मियों द्वारा हिन्दी में शोध-पत्र पोस्टर तैयार करने के साथ-साथ शोध-पत्र भी प्रकाशित किये गये। संस्थान से बाहर आयोजित हिन्दी कार्यशाला में भी संस्थान के वैज्ञानिक द्वारा सहभागिता की गयी ।

संस्थान की वेबसाइट द्विभाषी है जिसको समय-समय पर अद्यतन किया गया । इस वर्ष संस्थान की वेबसाइट पर उपलब्ध "हिन्दी-सेवा लिंक" में वाक्यांशों की द्विभाषी सूची शामिल की गयी ।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी तथा परिचालित विभिन्न नकद पुरस्कार योजनाएँ संस्थान में लागू हैं । संस्थान के कर्मियों ने इन योजनाओं में भाग लिया ।

हिन्दी गतिविधि के रूप में, 06 सितम्बर 2010 को संस्थान में शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया तथा इस अवसर पर मुख्य अतिथि, प्रोफ़ेसर अरूण कुमार निगम जी को सम्मानित किया गया।

शिक्षक दिवस के दौरान मुख्य अतिथि को सम्मानित करने का एक दृश्य

संस्थान में 14 से 20 सितम्बर 2010 के दौरान हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान आयोजित कार्यक्रम/प्रतियोगिताएँ इस प्रकार हैं : डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यान, प्रभागीय चल-शील्ड, प्रश्न-मंच, अन्ताक्षरी, हिन्दी श्रुतलेख एवं शब्दार्थ लेखन प्रतियोगिता,

हिन्दी सप्ताह के आयोजन का एक दृश्य

हिन्दी वर्तनी प्रतियोगिता एवं शोध-पत्र-पोस्टर-प्रदर्शन प्रतियोगिता । 14 सितम्बर 2010 को हिन्दी दिवस के अवसर पर "डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यान" के साथ-साथ हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन भी हुआ । यह वैज्ञानिक व्याख्यान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सहायक महानिदेशक (एच.आर.डी.) एवं परीक्षा नियंत्रक, डॉ. सुखदेव शर्मा द्वारा "भारत में कृषि शिक्षा" विषय पर दिया गया। समारोह की अध्यक्षता राष्ट्रीय कृषि आर्थिकी एवं नीति अनुसंधान केन्द्र के निदेशक, डॉ. रमेश चन्द जी द्वारा की गयी । हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह के अवसर पर संस्थान के निदेशक, डॉ. विजय कुमार भाटिया द्वारा इस दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के सफल प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया।

संस्थान में दिनांक 14-20 सितंबर 2010 के दौरान आयोजित किये गये हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत पोस्टर प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता के अन्तर्गत शोध-पत्र

- कुमार, प्रमोद एवं तोमर, राजेन्द्र सिंह: विविधिकरण या तीव्रीकरण प्रक्रिया द्वारा उपयोगी फसलक्रम का चयन ।
- प्रज्ञेषु, घोष, हिमाद्रि, एवं वधवा, सविता: जनरलाइज्ड लैम्बडा आबंटन (जी.एल.डी.) का यूनीमॉडल वर्षा आँकड़ों में उपयोग ।
- पॉल, ए.के., बेहरा, एस.के. एवं वाही, एस.डी. - एनोवा विधि द्वारा मासटाईटिस रोग की अनुवांशिकता का अनुमान ।
- सिंह, पॉल, मरवाह, सुदीप, अग्रवाल, हरि ओम एवं सिंह, हरनाम - मक्का फसल सूचना तंत्र ।

संस्थान में हिन्दी के प्रागामी प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने के लिए संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा 27 सितम्बर, 2010 को संस्थान में हिन्दी कार्यों का निरीक्षण किया गया ।

संस्थान द्वारा हिन्दी पत्रिका, "सांख्यिकी-विमर्श" के छठे अंक का प्रकाशन किया गया। इस अंक में संस्थान के कीर्तिस्तम्भ, कृषि अनुसंधान सांख्यिकीविदों के राष्ट्रीय सम्मेलन, राजभाषा से सम्बन्धित कार्यों/गतिविधियों की जानकारी तथा प्रतिवदेनाधीन अवधि के दौरान किये गये अनुसंधानों एवं अन्य कार्यों के संक्षिप्त विवरण के साथ-साथ कृषि सांख्यिकी एवं कृषि में संगणक अनुप्रयोग से सम्बन्धित विभिन्न लेखों एवं शोध-पत्रों को प्रस्तुत किया गया है। प्रतिवेदनाधीन अवधि के दौरान संस्थान में आयोजित डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 19वें वैज्ञानिक व्याख्यान को आमन्त्रित ज्ञानवर्धक लेख के रूप में इस पत्रिका में सम्मिलित किया गया है । अन्त में, पाठकों के हिन्दी ज्ञानवर्धन के लिए दैनिक स्मरणीय शब्द-शतक हिन्दी व अँग्रेज़ी में दिया गया है ।

झाँसी जागरण
झाँसी
रविवार, 23 जनवरी, 2011
दैनिक जागरण 5

झाँसी : प्रशिक्षण शिविर में मौजूद मुख्य अतिथि सहित अन्य विशेषज्ञ।

कृषि वानिकी आंकड़ों का विश्लेषण सिखाया

झाँसी : राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना के लिये सांख्यकीय संगणना के सुदृढ़ीकरण के तहत कृषि वानिकी आंकड़े के विश्लेषण पर प्रशिक्षण शिविर का आज समापन हो गया। कृषि वानिकी अनुसंधान केन्द्र झाँसी द्वारा यह कार्यक्रम भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान के तत्वावधान में किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. अरविन्द कुमार ने वैज्ञानिकों को अनुसंधान में सॉफ्टवेयर एवं सांख्यिकी पैकेजों का समुचित उपयोग कर वैध निष्कर्ष निकालने में होने वाली सहायता पर प्रसन्नता व्यक्त की। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने एसएएस सॉफ्टवेयर की उपयोगिता बतायी। राष्ट्रीय प्राध्यापक डॉ. वी के गुप्ता ने कहा कि यह प्रशिक्षण कृषि वानिकी जगत से जुड़े लोगों के लिये कारगर साबित होगा। इस आयोजन में डॉ. ए के हाण्डा, डॉ. अजीत का विशेष सहयोग रहा।

स्वदेश
कुल पृष्ठ 12 मूल्य 2.00 रु. मंगलवार झांसी 18 जनवरी, 2011
पौष शुक्ल पक्ष त्रयोदशी, संवत 2067, युगाब्द 511

कृषिवानिकी आंकड़ों के विश्लेषण पर प्रशिक्षण शुरू

नगर संवाददाता

झांसी, 12 जनवरी। राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना एन.ए.आई.पी.के. लिये सांख्यिकीय संगणना के सुदृढ़ीकरण के अन्तर्गत एस.ए.एस. साफ्टवेयर के उपयोग द्वारा कृषिवानिकी आंकड़ों के विश्लेषण पर प्रशिक्षण शुरू हो गया। कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र के द्वारा भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान पूसा नई दिल्ली के सौजन्य से किया है।। कार्यक्रम में अखिल भारतीय समन्वित कृषिवानिकी परियोजना के अन्तर्गत देश के विभिन्न प्रांतों में फैले 25 केन्द्रों से आये वैज्ञानिकगण भाग ले रहे हैं। डॉ. एस.के.ध्यानी निदेशक राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए साफ्टवेयर की उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

डा. राजेन्द्र प्रसाद प्रमुख अन्वेषक एवं प्रभागाध्यक्ष ने 6 दिवसीय कार्यक्रम की रूपरेखा का परिचय देते हुए एस.ए.एस. साफ्टवेयर की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित वी.के.गुप्ता राष्ट्रीय प्राध्यापक ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि एस.ए.एस. साफ्टवेयर पर आयोजित यह प्रशिक्षण कार्यक्रम कृषिवानिकी जगत से जुड़े लोगों के लिये कारगर साबित होगा। अंत में प्रदीप कुमार मल्होत्रा ने आभार व्यक्त किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन में केन्द्र के वैज्ञानिक डा.ए.के.हाण्डा एवं डा. अजीत का योगदान है।

झाँसी जागरण
झाँसी, 18 जनवरी, 2011

आंकड़ों के बेहतर विश्लेषण पर जोर

झाँसी: राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना के लिये सांख्यिकीय संगणना के सुदृढ़ीकरण के तहत एसएएस सॉफ्टवेयर के उपयोग द्वारा कृषि वानिकी आंकड़ों के विश्लेषण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान केन्द्र झाँसी के निदेशक डॉ. एस के ध्यानी ने प्रशिक्षण का उद्घाटन करते हुये आंकड़ों के बेहतर ढंग से होने वाले विश्लेषण के लाभ बताये। प्रमुख अन्वेषक एवं प्रभागाध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने सॉफ्टवेयर की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। डॉ. वी के गुप्ता ने कहा कि सॉफ्टेवयर पर आयोजित यह प्रशिक्षण कृषिवानिकी जगत से जुड़े लोगों के लिये कारगर साबित होगा। बाद में डॉ. प्रदीप कुमार मलहोत्रा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

स्वदेश
झांसी, रविवार २३ जनवरी २०११ ५

कृषिवानिकी आँकड़ों के विश्लेषण पर प्रशिक्षण संपन्न

झांसी, 22 जनवरी। राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना एन ए आई पी के लिये सांख्यिकीय संगणना के सुदृढ़ीकरण के अन्तर्गत एस ए एस सॉफ्टवेयर के उपयोग द्वारा कृषिवानिकी आँकड़ों के विश्लेषण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम 17 जनवरी को प्रारंभ होकर आज संपन्न हो गया।

कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झांसी के द्वारा भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान भाकृअनुप, लाईब्रेरी एवेन्यू, पूसा, नई दिल्ली-110, 012 के सौजन्य से किया गया है। कार्यक्रम में अखिल भारतीय समन्वित कृषिवानिकी परियोजना के अन्तर्गत देश के विभिन्न प्रान्तों में फैले 25 केन्द्रों से आये वैज्ञानिकों ने भाग लिया। डा. एस के ध्यानी निदेशक, राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झांसी ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलता पर प्रसन्नता जाहिर की।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डा. अरविन्द कुमार, उप महानिदेशक शिक्षा, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने प्रशिक्षण कार्यक्रम द्वारा वैज्ञानिकों को अनुसंधान में सॉफ्टवेयर एवं सांख्यिकीय पैकेजों का समुचित उपयोग कर वैध निष्कर्ष निकालने में होने वाली सहायता पर प्रसन्नता व्यक्त की। डा. राजेन्द्र प्रसाद, कंसोर्टियम प्रमुख अन्वेषक एवं प्रभागाध्यक्ष, परीक्षण अभिकल्पना, भाकृसाअसं, नई दिल्ली ने कार्यक्रम की विस्तृत ब्यौरा देते हुए एस ए एस साफ्टवेयर की उपयोगिता बताई।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित डा. वी के गुप्ता, राष्ट्रीय प्राध्यापक ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहाकि एस ए एस, साफ्टवेयर पर आयोजित यह प्रशिक्षण कार्यक्रम कृषिवानिकी जगत से जुड़े लोगों के लिए कारगर साबित होगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन में केन्द्र के वैज्ञानिक डा. ए के हाण्डा एवं डा. अजीत का योगदान है। प्रशिक्षणार्थियों ने कार्यक्रम की रूपरेखा, संचालन एवं विषयवस्तु की सराहना की।